भारतीय संगीत शास्त्र
बी.ए. द्वितीय वर्ष परीक्षा
सत्र 2007–2008 से प्रभावी
कंठ संगीत

प्रथम प्रश्नपत्र – संगीत विज्ञान **पूर्णांक : 40**

1. भातखण्डे तथा विष्णु दिगम्बर स्वरलिपि पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन।
2. प्राचीन तथा मध्यकालीन भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास।
3. उत्तर भारतीय तथा दक्षिण भारतीय संगीत के स्वरों और तालों का तुलनात्मक अध्ययन।
4. हारमनी एवं मैलॉडी में अन्तर।
5. संगीत सम्बन्धी विषयों पर संक्षिप्त निबन्ध लिखने का अभ्यास।
6. ध्रुपद, धमार, ख्याल, टप्पा–ठुमरी गायन शैलियों का विस्तृत अध्ययन।

द्वितीय प्रश्न पत्र

रागों और तालों का अध्ययन **पूर्णांक : 40**

1. अधोलिखित विषयों का ज्ञान –
   निबद्धगान, अनिबद्धगान, रागालाप, रूपकालाप, आलिप्त, अलपत्व और बहुत्व, आविर्भाव–तिरोभाव, आलाप का स्वरस्थान नियम, आधुनिक आलाप गायन तराना, त्रिवट एवं चतुरंग।
2. राग वर्गीकरण का सविस्तार अध्ययन।
3. अधोलिखित रागों का आरोह, अवरोह, पकड़ एवं मुख्य स्वर समुदायों तथा समस्त विशेषताओं सहित विस्तृत अध्ययन– छायानट, गौड़मल्हार, मियां मल्हार, दरबारी रामकली, पूरियाधनाश्री, शुद्धकल्याण और बहार।
4. आलाप के माध्यम से राग पहचानने तथा रागों में अन्तर स्पष्ट करने की क्षमता।
5. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में आलाप, तान एवं बोल तान सहित ख्यालों को स्वरलिपि में लिखने की योग्यता।
6. ध्रुपद तथा धमार को दुगुन, तिगुन एवं चौगुन सहित स्वरलिपि में लिखना।
7. अधोलिखित तालों को उनके ठेके सहित दुगुन, तिगुन एवं चौगुन में लिखने की क्षमता कहरवा, सूलताल, रूपक और धमार।
8. निम्नलिखित संगीतज्ञों का जीवन परिचय एवं उनकी देन– तानसेन, पंडित विष्णु दिगम्बर, पलुस्कर, पंडित ओंकारनाथ ठाकुर और भीमसेन जोशी।

क्रियात्मक परीक्षा

प्रथम प्रश्नपत्र — **40 अंक**

कुल अंक — **70**

1. अधोलिखित रागों में पूर्ण गायकी सहित एक–एक द्रुतख्याल– गौड़मल्हार, मियाँमल्हार, दरबारी, रामकली, छायानट, पूरियाधनाश्री, शुद्धकल्याण तथा बहार।
2. पाठ्यक्रम में वर्णित रागों में से किन्हीं दो रागों में एक विलम्बित ख्याल पूर्ण गायकी सहित।
3. वर्णित रागों में से किसी एक राग में एक ध्रुपद लयकारी सहित।
4. पाठ्यक्रम के किसी एक राग में एक धमार लयकारी सहित।
5. पाठ्यक्रम के किसी राग में एक तराना या भजन।
6. अधोलिखित तालों का ज्ञान– कहरवा, सूलताल, रूपक तथा धमार।

द्वितीय प्रश्नपत्र — **30 अंक**

मौखिक परीक्षा

बी.ए. द्वितीय वर्ष परीक्षा

सत्र 2007–2008 से प्रभावी

वाद्य संगीत

वर्ग–अ– तंत्र एवं सुधिर वाद्य (वीणा, सरोद, सितार, इसराज, गिटार, वायलिन और बांसुरी)

प्रथम प्रश्न पत्र

संगीत विज्ञान — **पूर्णांक : 40**

1. भातखण्डे तथा विष्णु दिगम्बर स्वरलिपि पद्धतियों का तुलनान्तमक अध्ययन।
2. प्राचीन तथा मध्यकालीन भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास।
3. राग वर्गीकरण।
4. उत्तर तथा दक्षिण भारतीय संगीत पद्धतियों के स्वरों और तालों का तुलनात्मक अध्ययन।
5. हारमनी एवं मैलॉडी में अन्तर।
6. वाद्यों का इतिहास।
7. भारतीय वाद्यों का वर्गीकरण।
8. संगीत सम्बन्धी विषयों पर संक्षिप्त निबन्ध लिखना।

द्वितीय प्रश्न पत्र

रागों और तालों का अध्ययन **पूर्णांक : 40**

1. अधोलिखित रागों के आरोह, अवरोह, पकड़ मुख्य स्वर समुदाय एवं सम्पूर्ण विशेषताओं सहित विस्तृत एवं तुलनात्मक अध्ययन– दरबारी, दुर्गा, मियाँमल्हार, बसंत, रामकली, झिझोटी, मुलतानी और गौड़मल्हार।
2. जोड़, आलाप, जमजमा, झाला, लागडाट, तारपरन तथा लड़गुथाव की परिभाषाऐं।
3. निम्नलिखित विषयों का ज्ञान– राग–लक्षण, निबद्धगान, अनिबद्धगान, रागालाप, रूपकालाप, आलप्ति, अल्पत्व–बहुत्व, आविर्भाव–तिरोभाव, आलाप का स्वस्थान नियम, आधुनिक आलाप गायन, प्रबन्ध, ध्रुपद, धमार, ख्याल, टप्पा, ठुमरी, तराना, त्रिवट और चतुरंग।
4. अधोलिखित तालों को उनके ठेकों सहित दुगुन, तिगुन और चौगुन में लिखने की योग्यता कहरवा, सूलताल, रूपक और धमार।
5. पंडित विष्णु दिगम्बर, पलुस्कर, इनायत खाँ, अमश्तसेन और अलाउद्दीन खाँ का जीवन परिचय तथा संगीत में उनकी देन।

क्रियात्मक परीक्षा

प्रथम प्रश्नपत्र 40 अंक **कुल अंक 70**

1. अधोलिखित रागों में एक–एक रजाखानी गत, तोड़े तथा झाल सहित– दरबारी, दुर्गा, मियाँमल्हार, बसंत रामकली, झिझोटी, मुलतानी और गौड़मल्हार।
2. उपर्युक्त वर्णित रागों में से किन्हीं पाँच रागों में मसीताखानी गत तथा तोडे।
3. वर्णित रागों में से किन्हीं दो रागों में अलाप एवं जोड़ आलाप बजाने की क्षमता।
4. पाठ्यक्रम के किन्हीं दो रागों में एक लाइट धुन बजाना।
5. निम्नलिखित तालों को ठाह, दुगुन, तिगुन एवं चौगुन में ताली देकर बोलना कहरवा, सूलताल, रूपक और धमार।

द्वितीय प्रश्नपत्र **30 अंक**

मौखिक परीक्षा

बी.ए. द्वितीय वर्ष परीक्षा 2007–08 से प्रभावी

वाद्य संगीत

वर्ग – ब अवनद्ध वाद्य (तबला और पखावज)

प्रथम प्रश्नपत्र संगीत विज्ञान **पूर्णांक : 40**

1. तबला और पखावज के विभिन्न घराने तथा बाज एवं उनका तुलनात्मक अध्ययन।
2. कर्नाटक ताल पद्धति का सविस्तार अध्ययन।
3. प्राचीन काल एवं मध्यकाल के भारतीय संगीत के इतिहास का संक्षिप्त ज्ञान।
4. पाश्चात्य संगीत में प्रयोग होने वाले अधोलिखित शब्दों की परिभाषा– क्लैफ (Claf), टाईम सिगनेचर (Time Signature), साधारण काल (Simple Time), ड्यूपिल टाइम (Duple Time), ट्रिपल टाइम (Triple Time), क्वाडरिपल टाइम (Quardruple), और रिद्धम (Rhythem)।
5. हारमनी और मैलॉडी का ज्ञान तथा उनमें अन्तर।

द्वितीय प्रश्न पत्र

तालों का अध्ययन **अंक 40**

1. अधोलिखित शब्दों की परिभाषा– लग्गी, बांट, लड़ी, गत, कमाली तथा फरमाइशी चक्करदार परन, लोम–विलोम और नौहक्का।
2. कंठ–संगीत, वाद्य संगीत और नृत्य के साथ संगत करने के सिद्धान्तों का अध्ययन।
3. दिये गये बोलों को पढ़कर ताल पहचानने की क्षमता।
4. विभिन्न गायन शैलियों के साथ विभिन्न तालों के प्रयोग का सिद्धान्त।
5. अधोलिखित तालों को विभिन्न लयकारियों में लिखना तथा विभिन्न लयकारियों में से किसी ताल से आवर्त को प्रारम्भ करने के स्थान का पता लगाना– आड़ा चौताल, पंचम सवारी, रूद्र ताल, फरोदस्त, अद्धापंजाबी और शिखर।
6. निम्नलिखित तबला वादकों की जीवनी और उनकी देन–उस्ताद करामत उल्ला खाँ, इबीबुद्दीन खाँ, पंडित अनोखे लाल नत्थू खाँ।

क्रियात्मक परीक्षा

प्रथम प्रश्न पत्र **40 अंक**

कुल अंक **70**

1. एक ताल, आड़ा चौताल और पंचम सवारी को विस्तार में सीखना जिसमें पेशकार, तीन कायदे, पल्टों सहित एक गत, पाँच टुकड़े, एक रेला और एक परन तथा एक चक्करदार परन।

2. रूद्र ताल, ब्रह्म ताल, फरोदस्त, अद्धा पंजाबी और शिखरताल को ताल देकर बोलना।
3. सूलताल और तीब्रा तालों में दो परन, दो टुकड़े और दो तिहाइयाँ।
4. तबला पखावज लेने वाले विद्यार्थियों को सोलो वादन तथा संगत करने का अभ्यास अपेक्षित।

द्वितीय प्रश्न पत्र **अंक 30**

मौखिक परीक्षा